NEXT IAS

दैनिक संपादकीय विश्लेषण

विषय

सऊदी अरब-पाकिस्तान सामरिक पारस्परिक रक्षा समझौता और इसके भू-राजनीतिक निहितार्थ

www.nextias.com

सऊदी अरब-पाकिस्तान सामरिक पारस्परिक रक्षा समझौता और इसके भू-राजनीतिक निहितार्थ

संदर्भ

- सऊदी अरब और पाकिस्तान के बीच हाल ही में हुआ रणनीतिक पारस्परिक रक्षा समझौता (SMDA) भारत सहित दक्षिण एशियाई भू-राजनीति में एक बड़ा परिवर्तन लेकर आया है, जो भारत की क्षेत्रीय सुरक्षा संरचना एवं खाड़ी देशों तक उसकी कूटनीतिक पहुँच के बारे में लंबे समय से चली आ रही धारणाओं को चुनौती देता है।

सऊदी अरब और पाकिस्तान के बीच SDMA के बारे में

- यह इस्लामी एकजुटता और साझा रणनीतिक हितों पर आधारित लगभग आठ दशकों के सहयोग पर आधारित है, जो उनके संबंधों को एक औपचारिक संधि ढाँचे तक ले जाता है।
- इसमें कहा गया है कि 'किसी भी देश के विरुद्ध किसी भी आक्रमण को दोनों के विरुद्ध आक्रमण माना जाएगा', जिससे प्रभावी रूप से दोनों पक्ष एक-दूसरे के लिए खतरों का जवाब देने के लिए प्रतिबद्ध होंगे।
- इसमें निम्नलिखित के प्रावधान सम्मिलित हैं:
  - स्थायी समन्वय तंत्र;
  - संयुक्त सैन्य समितियाँ;
  - खुफिया जानकारी साझा करने की व्यवस्था;
  - विस्तारित प्रशिक्षण कार्यक्रम;

सऊदी अरब और पाकिस्तान: बदलते समीकरण

- **धार्मिक एवं सांस्कृतिक आधार:** दो पवित्र मस्जिदों के संरक्षक के साथ घनिष्ठ संबंध पाकिस्तान की घरेलू और वैचारिक पहचान को सुदृढ़ करते हैं तथा लोगों के बीच संबंधों को सुदृढ़ करते हैं।
  - **अखिल-इस्लामी एकजुटता:** पाकिस्तान ने प्रायः स्वयं को सऊदी अरब की संप्रभुता के संरक्षक के रूप में स्थापित किया है, विशेषकर क्षेत्रीय तनाव के समय में।
- **राजनयिक एवं रणनीतिक उपलब्धियाँ:**
  - **1947 के बाद:** पाकिस्तान की स्वतंत्रता के पश्चात, सऊदी अरब पाकिस्तान को मान्यता देने वाले प्रथम देशों में से एक था।
  - **1974 इस्लामिक शिखर सम्मेलन, लाहौर:** यह मुस्लिम एकता का एक महत्वपूर्ण पड़ाव था, जिसमें सऊदी-पाकिस्तान संबंध सबसे आगे थे।
  - **1998 परमाणु परीक्षण:** पाकिस्तान के परमाणु परीक्षणों के बाद, सऊदी अरब ने इस्लामाबाद को अंतर्राष्ट्रीय प्रतिबंधों से निपटने में सहायता के लिए महत्वपूर्ण वित्तीय सहायता और तेल सब्सिडी प्रदान की।
  - **2019 क्राउन प्रिंस एमबीएस का दौरा:** इस यात्रा के परिणामस्वरूप ग्वादर में एक रिफाइनरी और पेट्रोकेमिकल कॉम्प्लेक्स सहित 10 बिलियन डॉलर के निवेश का वादा किया गया।

- **सैन्य सहयोग:**
  - **1967 रक्षा प्रोटोकॉल:** औपचारिक सैन्य सहयोग की शुरुआत हुई, जिसमें पाकिस्तानी सलाहकारों द्वारा सऊदी बलों को प्रशिक्षण देना शामिल था।
  - **1982 विस्तार:** इसमें सऊदी अरब में पाकिस्तानी सैनिकों की तैनाती और संयुक्त अभ्यास शामिल थे।
- **आर्थिक और मानवीय सहायता:**
  - **वित्तीय जीवनरेखाएँ:** सऊदी अरब ने आर्थिक संकटों के दौरान पाकिस्तान को बार-बार सहायता की है—विशेष रूप से 2018 में 6 अरब डॉलर के पैकेज के साथ।
  - **प्रवासी सेतु:** 20 लाख से अधिक पाकिस्तानी सऊदी अरब में रहते और कार्य करते हैं, अरबों डॉलर की धनराशि भेजते हैं और दोनों देशों के बीच एक जीवंत सेतु का कार्य करते हैं।

सऊदी अरब के लिए रणनीतिक महत्व

- **अमेरिकी निर्भरता से परे सुरक्षा आश्वासन:** खाड़ी के सुरक्षा गारंटर के रूप में अमेरिका की घटती प्रतिबद्धता को लेकर चिंताओं के बीच, पाकिस्तान एक परीक्षित साझेदार को परमाणु क्षमता प्रदान करता है।
  - यह पश्चिम एशिया में बढ़ती अनिश्चितता के विरुद्ध एक सुरक्षा कवच है, विशेषकर कतर पर इज़राइल के हमले के बाद, जहाँ अल-उदैद एयरबेस स्थित है—जो इस क्षेत्र का सबसे बड़ा अमेरिकी सैन्य अड्डा है।
- **ईरान और इज़राइल के प्रति संतुलन:** सऊदी अरब को हूतियों जैसे ईरान समर्थित छद्म ताकतों और पूरे क्षेत्र में बढ़ते इज़राइली दबदबे से ख़तरा है।
  - एसएमडीए, पाकिस्तान की सैन्य क्षमताओं, जिसमें उसकी परमाणु क्षमता भी शामिल है, के साथ सामंजस्य बिठाकर सऊदी की निवारक स्थिति को सुदृढ़ करता है—हालाँकि स्पष्ट रूप से नहीं कहा गया है, लेकिन इसका प्रतीकात्मक अर्थ प्रभावशाली है।
- **रणनीतिक गहराई का विस्तार:** इस समझौते में संयुक्त सैन्य समितियाँ, ख़ुफ़िया जानकारी साझा करना और विस्तारित प्रशिक्षण कार्यक्रम शामिल हैं।
  - यह दशकों के अनौपचारिक सहयोग को औपचारिक रूप देता है, जिसमें सऊदी साम्राज्य में पाकिस्तान की लंबे समय से चली आ रही सैन्य तैनाती भी शामिल है।
- **सैन्य विशेषज्ञता:** पाकिस्तान की सेना ने ऐतिहासिक रूप से सऊदी बलों को प्रशिक्षित किया है और पवित्र स्थलों की रक्षा की है।
- **आर्थिक और ऊर्जा गलियारे:** यह साझेदारी विज़न 2030 निवेश के लिए मार्ग सुनिश्चित करती है, विशेष रूप से सीपीईसी और ग्वादर के माध्यम से।
  - पाकिस्तान और सऊदी अरब, दोनों ही सीपीईसी और बेल्ट एंड रोड पहल के माध्यम से चीन की रणनीतिक परिधि का हिस्सा हैं।

पाकिस्तान के लिए रणनीतिक महत्व

- **आर्थिक और सैन्य लाभ:** यह समझौता पाकिस्तान को आर्थिक निर्भरता को रणनीतिक प्रभाव में बदलने की अनुमति देता है।

- यह पाकिस्तान को एक क्षेत्रीय सुरक्षा प्रदाता के रूप में स्थापित करता है, जिससे घरेलू चुनौतियों के बीच उसकी वैश्विक प्रासंगिकता बढ़ती है।
- सऊदी अरब, पाकिस्तान के लिए रियायती ऋण, प्रेषण और तेल सब्सिडी का सबसे बड़ा स्रोत बना हुआ है।

- **परमाणु कूटनीति:** पाकिस्तान ने संकेत दिया कि आवश्यकता पड़ने पर सऊदी अरब पाकिस्तान की परमाणु क्षमताओं का उपयोग कर सकता है।
  - यह खाड़ी के लिए एक संभावित परमाणु छत्र के रूप में पाकिस्तान की स्थिति को बढ़ाता है, एक ऐसी भूमिका जिसका भू-राजनीतिक महत्व महत्वपूर्ण है।
- **सैन्य प्रतिष्ठा और प्रभाव:** हस्ताक्षर समारोह में पाकिस्तान के सेना प्रमुख की उपस्थिति विदेश नीति को आकार देने में पाकिस्तान के सैन्य प्रतिष्ठान की केंद्रीय भूमिका का संकेत देती है।
  - यह अपनी घरेलू स्थिति और अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव को मज़बूत करने के लिए इस समझौते का लाभ उठा रहा है।
- **भारत के विरुद्ध रणनीतिक गहराई:** एक समझौता पाकिस्तान की भारत के साथ सौदेबाजी की शक्ति को बढ़ाता है, अप्रत्यक्ष रूप से उसकी प्रतिरोधक क्षमता को सुदृढ़ करता है।
- **सैन्य तकनीक और प्रशिक्षण:** सऊदी अरब द्वारा वित्त पोषित उन्नत सैन्य उपकरणों, संयुक्त अभ्यासों और रणनीतिक साझेदारियों तक पहुँच।

संबद्ध वैश्विक अनिश्चितता और जोखिम

- **क्षेत्रीय सुरक्षा व्यवस्था:** अब्राहम समझौते के विस्तार का अमेरिकी एजेंडा गाजा में इज़राइल युद्ध अवरोधित हो गया है।
  - सऊदी अरब ने स्पष्ट कर दिया है कि वह इज़राइल के साथ संबंधों को तभी सामान्य करेगा जब एक फ़िलिस्तीनी राज्य के प्रति प्रतिबद्धता होगी - एक ऐसी माँग जिसे इज़राइल अस्वीकार करता है।
- **क्षेत्रीय प्रतिद्वंद्विता:** पाकिस्तान को सऊदी अरब की ईरान के साथ प्रतिद्वंद्विता या यमन के लंबे संघर्ष में प्रभावित किया जा सकता है।
  - सऊदी अरब स्वयं को दक्षिण एशियाई अस्थिरता, विशेष रूप से भारत-पाकिस्तान तनाव के कारण, प्रभावित हो सकता है।
  - यह ईरान और कतर के साथ विभाजन को गहरा कर सकता है, जिससे ओआईसी एकता को चुनौती मिल सकती है।

भारत की रणनीतिक चिंताएँ

- भारत ने ऊर्जा, व्यापार और प्रवासी संबंधों के माध्यम से सऊदी अरब के साथ संबंधों को गहरा किया है, जबकि पश्चिम एशिया नीति में इज़राइल समर्थक झुकाव बनाए रखा है। रक्षा समझौता इस संतुलन को जटिल बनाता है।
- सऊदी अरब संकेत देता है कि वह पाकिस्तान को औपचारिक रक्षा साझेदार के रूप में चुनकर अपने सुरक्षा हितों को प्राथमिकता देगा, भले ही इससे भारत असहज हो।
- **भारत के लिए, चुनौती दोहरी है:**
  - अगर पाकिस्तान स्वयं को एक विश्वसनीय सुरक्षा प्रदाता के रूप में स्थापित करता है, तो खाड़ी क्षेत्र में अपने प्रभाव को कम होने से रोकना।
  - अमेरिका के प्रभुत्व के बाद की व्यवस्था के अनुकूल होना, जहाँ गठबंधन अधिक गतिशील और लेन-देन-आधारित हैं।

भारत द्वारा रणनीतिक मान्यताओं पर पुनर्विचार

- **खाड़ी तटस्थता:** भारत लंबे समय से खाड़ी देशों, विशेष रूप से सऊदी अरब को दक्षिण एशियाई विवादों में तटस्थ भूमिका निभाता रहा है।
- **क्षेत्रीय प्रतिरोध:** यह समझौता पाकिस्तान की प्रतिरोधात्मक स्थिति को बढ़ाता है, जिससे भविष्य के संघर्षों में उसका दृष्टिकोण अधिक सशक्त हो सकता है।
- **कूटनीतिक संतुलन:** भारत को एक अधिक ध्रुवीकृत क्षेत्रीय परिदृश्य में आगे बढ़ने की आवश्यकता है, सऊदी अरब के साथ अपने संबंधों को संतुलित करते हुए सऊदी-पाकिस्तान धुरी के प्रभावों का सामना करना होगा।

निष्कर्ष

- पाकिस्तान-सऊदी समझौता मज़बूत रक्षा के बजाय धारणा, प्रतिष्ठा और अनिश्चितता के दौरान प्रतिरोध पर अधिक केंद्रित है। यह पाकिस्तान की वैश्विक छवि को ऊँचा उठाता है, सऊदी अरब को कुछ सीमा तक सुरक्षा प्रदान करता है, भारत को अस्थिर करता है और वैश्विक शक्तियों को पुनर्संतुलन के लिए मजबूर करता है।
- सबसे बढ़कर, यह संकेत देता है कि क्षेत्रीय सीमाएँ कम हो रही हैं, जिससे परस्पर जुड़ी सुरक्षा संरचनाओं का एक नया युग शुरू हो रहा है।

Source: TH

दैनिक मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न: सऊदी अरब और पाकिस्तान के बीच रणनीतिक पारस्परिक रक्षा समझौता भारत की क्षेत्रीय सुरक्षा गणना को कैसे नया रूप देता है तथा व्यापक वैश्विक भू-राजनीतिक संरेखण को कैसे प्रभावित करता है, इसकी आलोचनात्मक जांच करें।